International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 669-670

शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी जाने वाली खेल सुविधाओं का मूल्यांकन

प्रवीण कुमार
सहायक व्याख्याता, शारीरिक शिक्षा विभाग, विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजूकेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी जाने वाली खेल सुविधाओं का मूल्यांकन किया जिसका उददेश्य शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों को दी जाने वाली खेल सुविधाओं का मूल्यांकन करना था। जिसकी परिकल्पना शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी जाने वाली खेल सुविधाओं में सार्थक अन्तर होता है, थी। प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के लिए भोपाल क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों से 100 विद्यार्थियों को लिया गया। जिसमें 50 छात्र तथा 50 छात्राएं है। इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी जाने वाली खेल सुविधाओं में सार्थक अन्तर होता है।

मूल शब्दः खेल सुविधाएँ, शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय

प्रस्तावना

विश्व में खेलों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। खेल मानव को प्रकृति की एक अनोखी देन है, आज से बहुत पहले खेलों के महत्व को स्वीकारा जा चुका है, ऐसा देखा जाता है कि खेलकूद तथा व्यायाम की क्रियाओं में हिस्सा लेने से व्यक्ति को कई प्रकार से लाभ प्राप्त होते हैं, नियमित रूप से व्यायाम तथा खेलों में भाग लेने वाले व्यक्ति को दूर से देखकर ही यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि वह शारीरिक रूप से स्वस्थ्य है। आधुनिक मनुष्य करोड़ों वर्ष पहले के मनुष्य से कमजोर दिखाई पड़ता है ऐसा देखा जाता है कि कार्यालय में काम करने वाले युवा पीढ़ी का बड़ा भाग अन्य जनसंख्या किसी भी प्रकार की खेल, गतिविधियों में भाग नहीं लेते है तथा वह मोटापे के शिकार, हृदय सम्बन्धित अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो जाते है। इसलिये खेलकूद के महत्व को जानना अनिवार्य है। खेलकूद में भाग लेने से शारीरिक विकास वह शारीरिक योग्यता बढ़न के साथ–साथ सामाजिक गुण, व्यक्तिगत आत्मविश्वास एवं सहयोग जैसे गुणों का विकास होता है।

खेल मनुष्य की प्रवृत्ति है, वह प्रवृत्ति बचपन से ही उसमें दिखाई देती है, जब बच्चा छोटा होता है, तो वह परिवार वालों के साथ खेलता है, फिर धीरे–धीरे अन्य खेलों को खेलना शुरू करता है और खेलों के साथ नियमों की जानकारी भी प्राप्त करता है, उसका मुख्य कारण यह है कि विद्यार्थी दूसरे युवकों को खेल खेलते देखते हैं, आजकल टेलीविजन पर उच्च स्तर की क्रीड़ा स्पर्धाएँ देखते है, जिसे उनके अन्दर खेल के प्रति भावना और खेल खेलने के लिए प्रेरणा का निर्माण होता है, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शरीर की हलचल क्रियाशील होती रहती है।

शर्मा (2000), ने ''द सर्वे ऑफ फिजिकल एज्युकेशन फैसिलिटीज एण्ड प्रोग्राम्स इन हाई स्कूल्स ऐण्ड सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल्स ऑफ ग्रेटर ग्वालियर'' विषय पर अध्ययन किया। इसमें ग्वालियर के स्कूलों में शारीरिक शिक्षा सुविधाओं पर अध्ययन किया। चयनित 35 हाई स्कूलों एवं सीनियर सेकेण्ड्री स्कूलों के प्राचार्यों को प्रश्नावलियाँ प्रेषित की गई जिनमें से 20 ने आंकड़े उपलब्ध कराये। प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे–

1. अधिकांश स्कूलों में पास शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम थे
2. समग्र के लगभग सभी विद्यालयों में आन्तकिर खेल तथा वार्षिक खेल दिवस आयोजित होते थे
3. अधिकांश स्कूलों में प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा के अध्यापक एवं पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध थीं
4. अधिकांश स्कूलों में प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के लिए कोचिंग आदि का प्रावधान था, और
5. अधिकांश स्कूलों में खेलों के लिए वार्षिक बजट 5000 रूपये या उससे अधिक था।

वर्नेकर (2000) इन्होंने ''सर्वे ऑफ फिजिकल एज्युकेशन ऐण्ड स्पोर्ट्स फैसिलिटीज इन सेकेण्ड्री स्कूल्स ऑफ नॉर्थ गोवा डिस्ट्रिक्स'' इस विषय पर अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत उत्तर गोवा जिलें में माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल सुविधाओं पर एक सर्वेक्षण किया। शोधकर्ता ने प्रश्नावली तथा निजी मुलाकातों की सहायता से आंकड़ों को एकत्रित किया। लगभग सभी विद्यालयों के प्रमुखों, शारीरिक शिक्षा अध्यापकों एवं खलाड़ियों को प्रश्नावली प्रेषित की गई जिनमें से लगभग 50 प्रतिशत ने आंकड़े उपलब्ध कराये। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात निष्कर्ष थे–

1. उत्तरी गोवा जिले के माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एक अनिवार्य विषय है
2. उत्तरी गोवा में बड़ी संख्या में स्कूलों द्वारा अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं में फुटबॉल, बॉलीबॉल, खो–खो, कबड्डी एवं एथलेटिक्स जैसे खेलों में प्रतिभाग किया जाता है
3. यहाँ के किसी भी स्कूल में जिमखाना का शुल्क नहीं लिया जाता
4. अधिकांश स्कूलों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल गतिविधियों के लिए ठीक–ठाक धनराशि का इंतजाम नहीं
5. लगभग सभी विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा के लिए व्यवसायिक स्तर के योग्य अध्यापक नियुक्त हैं और
6. यहाँ के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अध्यापकों पर भारी मात्रा में वर्कलोड रहता है।

समस्या कथन ''शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी

जाने वाली खेल सुविधाओं का मूल्यांकन''

अध्ययन के उद्देश्य

- शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी जाने वाली खेल सुविधाओं का मूल्यांकन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

- शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी जाने वाली खेल सुविधाओं में सार्थक अन्तर होता है।

अध्ययन का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भोपाल क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों से 100 विद्यार्थियों को लिया गया। जिसमें 50 छात्र तथा 50 छात्राएं है।

शोध विधि

इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध कार्य में प्रयुक्त साख्यिकी

शोध कार्य में आंकडों के संकलन के पश्चात उनका परिणाम निकालने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी टेस्ट आदि सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

आंकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

परिकल्पना का विश्लेषण

परिकल्पना

- शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी जाने वाली खेल सुविधाओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
शासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय के विद्यार्थी	50	65.07	3.23	4.2
अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय के विद्यार्थी	50	62.12	6.09	

सारणी क्रमांकः 1 से यह ज्ञात होता है कि शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों का मध्यमान 65.07 व 62.12 पाया गया। तथा उनका मानक विचलन 3.23 व 6. 09 पाया गया। दोनों समूह के बीच t का मान 4.2 पाया गया। जो सारणी मान से ज्यादा है। अर्थात् हमारी परिकल्पना शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी जाने वाली खेल सुविधाओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है, अस्वीकृत होती है। दोनों समूह में सार्थक अन्तर है।

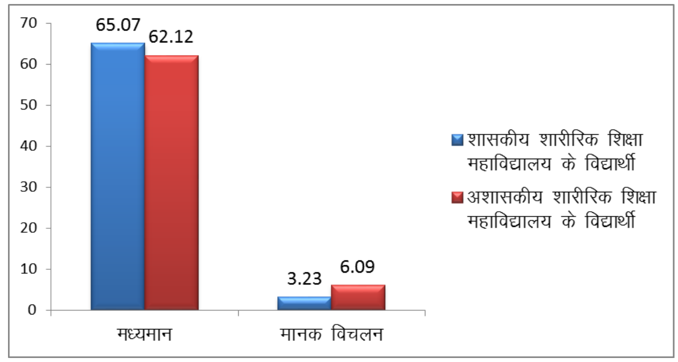

आरेख 1

निष्कर्ष

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की दी जाने वाली खेल सुविधाओं में सार्थक अन्तर होता है।

सुझाव

शासकीय एवं अशासकीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों को समान प्रकार की खेल सुविधाए दी जानी चाहिए जिससे शासकीय के साथ अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थी भी अच्छा प्रर्दशन कर सकें और उच्च उपलबधियॉ प्राप्त कर सकें।

संदर्भ

1. गैरट ई. हैनरी (1966)ः ''शिक्षा और मनोविज्ञान में संख्यिकी के प्रयोग'' कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।
2. गुप्ता. एच.पी. (2005)ः ''सांख्यिकीय विधि'' शारदा पुस्तक भवन इलाहाबद।
3. मुहम्मद सुलैमान एवं रिजवाना तरन्नुम (2006)ः ''मनोविज्ञान में प्रयोग एवं परीक्षण'' पब्लिशर्स मोतीलाल बनारसीदास।
4. रमा शर्मा, शारीरिक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा, पृ.क्र. 14–17.
5. शर्मा (2000), ने ''द सर्वे ऑफ फिजिकल एज्युकेशन फैसिलिटीज एण्ड प्रोग्राम्स इन हाई स्कूल्स ऐण्ड सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल्स ऑफ ग्रेटर ग्वालियर'' अप्रकाशित शोध